Vol II Issue IX

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume,II, Issue.9,Oct, 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

महिला उपन्यासकार और आदिवासी नारी विमर्श
('सीता' 'मौसी' और 'पिछले पत्रे की औरतें' उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)

पंढरीनाथ महादेवराव वाघमारे

सहायक प्राध्यापक,श्री सरस्वती महावद्यालय़
अंबाजोगाई जि . बीड .

प्रस्तावना :–

आज नारी विमर्श के स्तर पर नारी चेतना से संपन्न हिंदी उपन्यास हिंदी उपन्यास लिखे जा रहे है जिसमें नारी की आत्मा स्व और अहं ध्वनित होता दीखाई देता है | वास्तव में चेतना का अर्थ विचारों अनुभूतियों संकल्पों की अनुशांगिक दशा स्थिति अथवा क्षमता से हैं | उसका संबंध नारी की स्वयं की पहचान या किसी भी स्तर पर विषयगत अनुभवों के संगठित स्वरूप से होता हैं | नारी विमर्श और चेतना के विकास का ही परिणाम है कि नारी आज सामाजिक राजनीतिक आर्थिक व्यावसायिक क्षेत्रों में पुरूषों के समान ही नहीं वल्कि पुरूष से आगे वढकर अपना योगदान दे रही हैं | आधुनिक हिंदी उपन्यासों में चित्रित नारी चरित्रों में वैयक्तिक रूचि महत्वाकांक्षा स्वतंत्र चेतना अस्तित्व और द्वारा स्त्री के विषय में लिखा गया साहित्य 'साहित्यिक स्त्री विमर्श' माना जाता है | इसके मूल में स्त्री के अनुभव की प्रामाणिकता का तर्क दिया जाता है |

हिंदी उपन्यास साहित्य में लेखिकाओं ने अपनी उत्कृष्ट कृतियों व्दारा साहित्य के उच्च शिखर पर अपना कदम रखा है | इन महिला उपन्यासकारों में मन्नू भंडारी रमणिका गुप्ता शशीप्रभा मृदुला गर्ग मैत्रेयी पुष्पा ममता कलिया अलका सरावगी नासिरा शर्मा मृणाल पांड़े शरद सिंह आदि प्रमुख है | प्रस्तुत आलेख में रमणिका गुप्ता के 'सीता' और 'मौसी' तथा शरद सिंह का 'पीछले पत्रे की औरतें' उपन्यास समाविष्ट है| 'सीता' उपन्यास छोटा नागपुर के करमाली जनजाति की स्त्री जीवन की त्रासदी और उसके संघर्ष की पृष्ठभूमि पर आधारित है | 'मौसी' मुड़ा जनजाति के स्त्री जीवन पर आधारित है | महिला लेखिका शरद सिंह का 'पिछले पत्रे की औरतें' मध्यप्रदेश के वुंदेलखंड कै बेड़िया जनजाति की महिलाओं को केंद में रखकर लिखा है |

रमणिका गुप्ता के 'सीता' और 'मौसी' ये दोनो उपन्यास स्वतंत्रता के पश्चात के उन आदिवासी आंचलों के है जो विकसित होकर औद्योगिक परिवेश में वदल रहे थ| इन आंचलों में आदिवासी संस्कृति औद्योगिकीकरण के कारण तार्रतार होकर नष्ट होने के कगार पर पहुँच रही थी उसे वचाने की कोशिश जददोजहद इन दो उपन्यासों की नारी पात्र करते हुए दिखाई देते है | इन उपन्यासों मे सीता और मौसी ये दोनो पात्रों का दवंग नेतृत्व और ओजस्वी संघर्ष अपनी समूची अस्तीत्व चेतना के साथ उभरकर आया है | अपनी अस्मीता वचाने हेतु इन दोनों उपन्यासों की सीता और मौसी ये पात्र व्यक्तिगत स्तर पर तो कहीं सामुहिक स्तर पर या संगठन के माध्यम से संघर्ष करती दिखाई देती है | स्वतंत्रता के पश्चात जहाँ आदिवासियों का वसेरा था उन आंचलों की भूमि पर और भूगर्भ में आकूत संपदा थी | सवसे पहले इन आंचलों से आदिवासीयों को औद्योगिकरण और विकास के नाम पर खदेड दिया गया| प्रारंभ में वहाँ निजी खदाने शुरू कर दी गयी | आदिवासियों का निजी क्षेत्र के कोयला खदान मालिक मुंशी ठेकेदार युनियम लिडर सरसकरी अधिकारी आदि मिलकर हर स्तर पर शोषण कर रहे थे| उस शोषण के खिलाफ उपन्यास की सीता आदिवासियों में चेतना जगाकर शोषण चक्र का मुकावला करते हुए अपनी संगठन शक्ति साहस नेतृत्व कौशल सामाजिक प्रतिवध्दता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करती है|

सन **1972** में सीता जैसी महिलाओं और उनके नेताओं के निजी कोयला खदानों और ठेकेदारी के खिलाफ शुरू की लड़ाई कोयला खदानों का सरकारीकरण में परिवर्तित हुई लेकिन आदिवासी समाज की स्थिति वद से वदतर होती जा रही थी | किसान से मजदूर वना आदिवासी जंगल और जमीन से वहिष्कृत कर दिया गया | आदिवासी एक तरफ जर्लजंगर्लजमीन की लड़ाई लड़ रहा था तो दूसरी तरफ रोजगार पाने और रोजगार वचाने के सार्थहींसाथ अधिकारों की वुनियादी लड़ाई लड़ रहा था | उस लड़ाई में सीता और मौसी जैसी महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है |

कोयला खदानों का राष्ट्रीयिकरण हो जाने पर निजी कोयला खदान मालिक ठेकेदार युनियन लिडर खदानों मे काम करनेवाले आदिवासी मजदूरों के न्वाम रातों रात हाजिरीवहियों से हटाना शुरू कर दिया हाजिरी वहियां गायव करनी प्रारंभ की और नये हाजिरी वहियों को तैयार कर उसमें अपने संवंधियों को कोलियरी स्टाफ और मजदूर के रूप में भर्ती करना प्रारंभ किया| नये लोगों को वुलाकर पैसे लेंलाकर हाजिरी खाते में नये नाम चढ़ा दिये जा रहे थे| सीता सभी कोयला खदानों के मजदूरों मे इसके विरूध्द चेतना जगाकर विरोध का साहज जुटाती है | अपने अतुलनिय साहस का परिचय देती हुई वह कोलियरी मैनेजर से कहती है "चल भडूए ऑफीस में वैठ जाके ॐ दखल दिया तो मुंडी काट लेंगे ॐ ख्मर पेट पर लात मत मार नहीं तो तोर रोवे वाला भी न मिली"**1**

आदिवासी समाज की आधुनिक राजनीति में सक्रिय सहभागिता नहीं है | आदिवासी वनों पर्वतों दुर्गम इलाकों में निवास करते है दुसरा उनका उपयोग राजनेता केवल वोट के लिए ही उक्षते है| उनको सुविधाएँ विकास के अवसर योजनाएँ आदि जान वुझकर मुहैया नहीं करायी जाती| उनको राजनीति से दूर ही रखा जाता है उसके वारे में कुछ पता चलने नहीं दिया जाता| किन्तु उपन्यास की सीता व्यवस्था का षडयंत्र समझती है | उपन्यास में सीता अपने मजदूर संगठन के कार्यकर्ताओं तथा

Please cite this Article as :पंढरीनाथ महादेवराव वाघमारे,महिला उपन्यासकार और आदिवासी नारी विमर्श('सीता' 'मौसी' और 'पिछले पत्रे की औरतें' उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)**:**
Indian Streams Research Journal (Oct; 2012)

उपन्यासकार से अपने राजनीतिक चेतना का परिचय देते हुए कहती हैं "चली हमनी सब मिल के इन्दरा गांधी ठिन चलब | उ तो जनी है ऽ की उ जनी के दुःख नाय सुनतै ऋ हमनी सब पर उकर पार्टी व उकरी युनियन के नेता कींकी जुल्म कर रहल हैं उसकी रिपोर्ट इन्द्रा गांधी ठिन जाके करबै तो उ कुछो नाय करतै ऋ इन्द्रा गांधी वोकारो आयलं रहल तो हमनी तो एक सौ त्रक में जायके भीड लगाय देयल रहल | जमशेदपुर में भी संजय गांधी के आए पर हमनी सब भूर्खेप्यासे उकरा स्वागत में गेले रहल | तबै भी न सुनते की उ हमर फरियाद ऋ ई कैसन लीडर है दीदी | जे मजदूर उकरा उठाया है उकरा ही मार रहल है ऋ"**2**

उपन्यास की सीता अपनी संस्कृति के प्रति अड़िगता का भी परिचय देती है | सीता भले ही आधुनिक सभ्यता समाजवालों के साथ रहती हो उनके जैसा पहनावा बोली रहर्नसहन दिनचर्या बीता रही हो लेकिन वह अपनी आदिम गरिमामयी संस्कृति और सभ्यता के प्रति कभी विमुखता का परिचय नहीं देती | जब सीता का पति उसे छोडकर दूसरी जनाना के साथ असम चला जाता है तब कोलियरी खदान का यासिन उससे इश्क कर बैठता है और सीता भी उसके इश्क में मशगुल है लेकिन वह उसके साथ निकाह पढ़ना नहीं चाहती बल्कि वह यासिन को ही माझी बनने के लिए विवश करती है | वह कहती हैं "हम धरम नाय बदलब | हमर रीती से ब्याह करे पड़ते | नाय तो तोर धरम माय चार शादी करे के हक हय ऽ हम सौतिन घरे नाय आय देब |"**3** आदिवासी नारी अथक परिश्रमी और लगनशील होती है वह कोई भी काम पूरी निष्ठा और इनामदारी से करते हुए परिवार के आर्थिक भार का वहन भी करती हैं "यहां औरतें ही कमाई करके घर चलाती है मरद की कमाई सहायक कमाई होती है | . . महुआ चुनने चुआने बेचने और हॉड़ियॉ तक का काम भी औरतें करती है | लकड़ी कअटना बेचना घर बनाना पशु पालना |"**4**

सीता लड़ती है झुकती नहीं वह दूसरो को खातिर लड़ती ह| वह अपने से बाहर खड़ी सीताओं के लिए लड़ने लगी है | सीता लड़ रही है हर मोर्चे पर सीता जुझ रहीं है अपने लिए नहीं जमात और समाज के लिए | सीता जानती है यह लड़ाई लंबी है अकेले नही लड़ी जा सकती इसलिए वह जमात बनाकर लड़ने की तैयारी करती है| लामबध्द होकर वह लड़ना चाहती ह| उसका मानना है कि उसकी तरह हर औरत लड़ना चाहती है| वह साहस बटोरती है | वहीं साहस और आत्मविश्वास वह अपनी जमात में बॉटते हुए इस उपन्यास में दिखाई देती है |

'मौसी' मुंड़ा जनजाति के नारी जीवन पर आधारित उपन्यास है | मौसी अपनी लड़ाई जंगल से शुरू करती है | खदानों मे जाती है | वहॉ उसका सलीम शोषण करता है उसके पश्चात सलीम के परिवार वाले और उसके पिता ने उसके साथ जबरदस्ती की | उसकी इतनी बदनियति की जिस सलीम को उसमे अपना जीवनसाथी मन ही मन वर लिया था उसी के बुढे पिता के साथ मौसी का निकाह करा दिया जाता है | सलिम चुपचाप देखता है किन्तु प्रतिकार कुछ नहीं करता फिर भी उसे भोगता रहता है | इस प्रकार दोनो पिता पुत्र मौसी को भोगते है | मौसी का केवल अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल किया जाता ह| अंतत: मौसी को वहॉ से भी भगाया जाता है | फिर मौसी को चौपारण का एक कोलियरी नेता उसे अपने जीवनसाथी के रूप में रख लेता है किंतु वहॉ भी मौसी को नेता उपभोग की वस्तू की तरह समझकर भोगता है | जब उसे अधिकार देने का समय आया तो वे मुकर जाता है | मौसी ने जंगल से अपनी जंग शुरू की थी और खदानों के बीहड़ में धक्के खकर फिर अपने गॉव लौट आई| लौट वह अपने जंगल में जंगल जो उजड चुका था उस गॉव में जो मूल आदिवासियत गंवा कर जातियों का आखाडा बन रहा था| मौसी संघर्ष की भाषा सीख चुकी थी | उस माहौल में अट नहीं पा रही थी| वह अस्मिता को पहचान और जान चुकी थी| उसने अपनी स्वतंत्रता बरकरार रखने के लिए गॉव भी छोड़ दिया और वह कमाने खटने के लिए शहर आ गई अपने भरोसे जीने के उपक्रम का संकल्प लेकर | बहुत से पुरूषों के हाथों में फिसलती चली गई थी मौसी | अब उसे पुरूष के भरोसे जीना स्वीकार नहीं था | उसे स्वीकार्य था पुरूष का साथी बन कर साथ लेनापति या खूंटा बना कर नहीं | मौसी के पास वापिस आये भगवान बाबु को अपना निर्णय सुनाते हुये वह कहती हैं "तो चल तू और हम दोनों मजूरी करके खटके खयब ॐ न तू ठाकुर्रन हम मुंडा | न तू बड़ जात नह म छोट जात | दोनों मजूर | हम तोर कमाई पर न रहब | हम अपनेई कमायब| मंजूर हय तो बोला| हम न तोर गॉव में रहब ना आपन गॉव में | दोनों जन मिल के काम करबकमायब होनेई रहब |"**5**

'पिछले पन्ने की औरतें' मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड़ की बेडिया जनजाति की महिलाओं के जीवन पर आधारित उपन्यास है| बेड़िया समाज में बेड़नी शब्द का प्रयोग उसी औरतों के लिए किया जाता है जो बेड़िया समाज की होती है तथा नृत्य करती है | किसी बेड़नी को कोई व्यक्ति रखेल के रूप में रखने का इच्छूक होता है उसे बेड़िया समाज की 'सिर्रढ़ंकना' की रस्म को अदा करना होता है | 'सिर्रढंकना' करनेवाला सवर्न्ण जाति का होना अनिवार्य होता है अथवा जिनके हाथों से बेड़िया समाज पानी पिता है ऐसा व्यक्ति होता है उसे बेड़िया समाज की 'सिर्रढ़ंकना' की रस्म को अदा करना होता है | 'सिर्रढंकना' करनेवाला सवर्ण जाति का होना अनिवार्य होता है अथवा जिनके हाथों से बेड़िया समाज पानी पिता है ऐसा व्यक्ति बेड़नी का सिर्रढ़ंकना करने का हकदार होता है | वह व्यक्ति सिर्रढ़ँकना की रीति में लड़की को धनराशि देता है इस धनराशि पर उस लड़की का अधिकार होता है | इस 'सिर्रढ़ँकना' के लिए लड़की लड़की के मार्तापिता की अनुमति भी अनिवार्य होती है | यह एक जातीय एवं सामाजिक प्राथा ह| जो लड़की विवाह कर घर बसाना चाहती है तो उसका विवाह कराया जाता है न कि उस पर जबरदस्ती | बेड़िया समाज में प्राय: सिर ढॅकनेवाले से ही संतान उत्पन्न की जाती है ताकि आर्थिक सहायता निश्चित हो जाए | इस प्रकार एक बेड़नी 'सिर्रढ़ँकना' के उपरान्त देह व्यवसायी अथवा नर्तकी होने की अतिरिक्त एक रखेल का स्वरूप धारण कर लेती ह| ऐसी रखेल के रूप में रखी गयी बेड़नियों का भौतिक सुख सुविधाओं ने एक स्थायी जीवन तो प्रदान किया है किन्तु सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं |

शमाज में इन औरतों की उपस्थिति को महसूसा तो जाता है किन्तु इनके प्रति संवेदना कभीकभार ही नजर आती है | अधिकतर लोगों के लिए यह औरतें नाचनेगानेवाली बेड़ीन मात्र है उन्हें हर कोई भोग्या के रूप में भोग सकता है | उपन्यास की नचनारी ठाकुर के बच्चे की मॉ बननेवाली है वह जब ठाकुर से इसके बारे में बतियाती है तब ठाकुर उदासिन भाव से उसके हाथ में कुछ पैसे थमाते हुए कहता हैं "जब पैदा हो जाए तो सूचित करना . . . . . जब आवश्यकता हो तो और खर्चा पानी मॉग लेना |"**6** ब्रिटिश सरकार ने अपराधीक जनजाति अधिनियम के अंतर्गत अनेक जनजातियों को जरायमपेशा करार दिया है जिनमें से एक बेड़ियॉ जनजाति भी है | स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान ने इस अधिनियम कोहटा दिया किन्तु अनेक जनजातियॉ आज भी उस कलंक को ढ़ो रही ह| समाज की पूर्वाग्रह दुषित मानसिकता ने उनको गैर कानुनी एवं अपराधपूर्ण कार्यो के लिए प्रेरित किया है |" अन्य समाज में वेश्यावृत्ति को हेय दृष्टि से देखा जाता है किन्तु बेड़िया समाज में वेश्यावृत्ति को निम्न अथवा हेय नहीं माना जाता . . . . . वे अपनी देह का उपयोग व्यावसायिक यौन संबंधों के लिए तो करती ही रही है साथ ही चोरी करने मे भी अपनी देह का भरपूर उपयोग करती है |"**7**

बेड़िया समाज में जीवन जीने की बुनियाद ही नार्चगाना रही है | यह नार्चगाना ही उनकी अपनी आर्थिक जरूरतों का आधार है | समाज में संपन्न से संपन्न लोग और मध्यमवर्गीय परिवारवाले भी अपेक्षाकृत कम पैसों में नाचमेवालियों को बुलाकर अपने यहॉ विवाह जन्मोंत्सव नामकरण जैसे छोटे बड़े उत्सवों पर नचाते है | बेड़नियों को विवार्हसमारोहों में नचाने के बदले पहले से तय किए गए पैसे दिए जाते है | अनुबंध के पैसे मिलते ही है साथ ही अपनी रईसी और उदारता का प्रदर्शन करनेवाले दर्शकों द्वारा भी उस अवसर पर दसियों रूपयें न्योछावर किए जाते है | उस पर लुटातो जानेवाले धन का आकर्षण बेड़नियों को मादक नृत्य के लिए प्रेरित करता है | जितना रसीला और मादक नृत्य होगा उतने ही अधिक रूपये इनाम में मिलेंगे"**8**

बेड़िया समाज की महिलाओं के प्रति समाज के दृष्टिकोन में मानवीय और सकारात्मक बदलाव लाने की आवश्यकता है| समाज में उनके प्रति व्यापक जनाधार जुटाने के आवश्यकता है | बेड़िया समाज की महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में लाकर उनमें अमुलचूल परिवर्तन लाना है तो उसके लिए व्यापक कदम उठाने की आवश्यकता है | सरकार और गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से उनके विकास के लिए योजनाएँ कियान्वित करने की आवश्यकता है | उनमें शिक्षा स्वास्थ्य जागृति भौतिक सुविधाएँ वैकल्पिक रोजगार के अवसर प्रशिक्षण की सुविधाएँ आदि नीतियों को अपनाकर उनमें चेतना जगाकर उनके जीवन की दिशा को परिवर्तित किया जा सकता है |

संदर्भ :-

1 . रमणिका गुप्ता सीर्तामौसी पृ . **44** .

2 . रमणिका गुप्ता सीतामौसी पृ . **42** .
3 . रमणिका गुप्ता सीतामौसी पृ . **32** .
4 . रमणिका गुप्ता सीतामौसी पृ . **40** .
5 . रमणिका गुप्ता सीतामौसी पृ . **174** .
6 . शरद सिंह पिछले पत्रे की औरतें पृ . **27** .
7 . शरद सिंह पिछले पत्रे की औरतें पृ . **68** .
8 . शरद सिंह पिछले पत्रे की औरतें पृ . **91** .

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net